OM-1- 2021 FINAL FILE_Page 1 and 2 15/03/2021 11:30 AM Page 11

जैविक, यौगिक, प्रमाणित, मूल्य वर्धित माल का बाज़ारपेठ

नांदेड़ से पंद्रह किलोमीटर दूरी पर मालेगांव के रहने वाले ब्र.कु. भगवान इंगोले(बाळू भाई) दस साल से हर तरह के फसलों की शाश्वत जैविक-यौगिक खेती कर रहे हैं। परिसर के किसानों को इकट्ठा कर विष-मुक्त ऑर्गेनिक हल्दी पाउडर, गुड़, अनाज इत्यादि उपज करने वाले किसानों का 'कृषि विभाग आत्मा' के अंतर्गत 'ओम शांति ऑर्गेनिक फार्मर' के नाम से ग्रुप बनाकर पी.जी.एस. इंडिया प्रमाणीकरण कर भारत सहित विदेशों में भी बाज़ारपेठ बनाई है।

नांदेड़ शहर से पंद्रह किलोमीटर दूर मालेगांव ता.अर्धापुर है। वहाँ पर इन्होंने पिछले दस साल से शाश्वत जैविक-यौगिक खेती में पहचान बनाई है। मानव-स्वास्थ्य ठीक हो, मानसिक तनाव से मुक्ति मिले, मन को शांति मिले, पर्यावरण संरक्षण हो, इसी उद्देश्य को लेकर वो ये कार्य कर रहे हैं। हल्दी के साथ गन्ना, उड़द, चना, गेहूँ, मूंग आदि फसलों की भी उपज करते हैं।

यौगिक हल्दी का उत्पादन

वे यौगिक हल्दी का एक हेक्टर में 75 से 80 टन का उत्पादन ले रहे हैं। इसका पाउडर बनाकर पुणे में शासकीय प्रयोगशाला में करक्यूमिन जैसे अन्य घटक की टेस्टिंग की जाती है। जिसमें ये पता चल जाता है कि इसमें किसी भी तरह के रसायन का प्रयोग है या नहीं। रसायनमुक्त पाये जाने पर पी.जी.एस. इंडिया द्वारा सर्टिफिकेट दिया जाता है। फिर इसके पाँच सौ ग्राम और एक किलो के पैकेट्स तैयार करके ऑनलाइन भी इसकी बिक्री की जाती है। 250 से 300 रुपये किलो के हिसाब से इसकी बिक्री होती है। उनके पास एक हेक्टर गन्ना में सौ टन का उत्पादन आता है। जिससे वे ऑर्गेनिक गुड़ और गुड़ पाउडर बनाते हैं जो 90 से 100 रुपये किलो भाव तक बेचा जाता है।

हल्दी के औषधीय गुण...

- वूहान इंस्टीट्यूट ऑफ बायो इंजीनियरिंग के संशोधक डॉ. लिलान शी नी ने बताया है कि टी.जी.ई.वी. विषाणु रोकने की क्षमता करक्यूमिन में पाई गई है।
- एक गिलास हल्दी वाले पानी को अगर आप सुबह पीते हैं तो इससे आपका पाचन-तंत्र भी अच्छा होगा और खाना भी आसानी से पचेगा।
- हल्दी वाले पानी को सुबह पीने से विषाक्त पदार्थ शरीर से बाहर निकल जाते हैं। साथ ही यह पानी शरीर के मेटाबॉलिज़्म को भी बढ़ाता है।

अन्य विषाणुजन्य रोगों को शरीर में आने से रोकने में हल्दी का उपयोग हो सकता है जिसमें डेंगू, हैपेटाइटिस-बी, झिंका आदि विषाणुओं का समावेश है। हल्दी में ट्यूमर रोधक गुण भी है। हल्दी बैक्टीरिया के संक्रमण को रोकती है। इसके एंटीसेप्टिक गुणों के कारण इसमें घाव भरने के गुण होते हैं। हल्दी में मौजूद एंटीऑक्सीडेंट घटक का उपयोग कैंसर कोशिकाओं को मारने के लिए किया जा सकता है।

- इसका नियमित सेवन डॉक्टर से सलाह लेने के पश्चात् ही करें।

फोन पर या ऑनलाइन ऑर्डर दे सकते हैं।
9421295984,7387291054, bkbalubhai@gmail.com

शाश्वत जैविक-यौगिक खेती करने की विधि

- पेड़-पौधे, फसलों, इन सभी में संवेदना होती है। सर जगदीश चन्द्र बोस और क्लीव बैकस्टर के अनुसार वनस्पतियां मनुष्य के विचार और भाव को समझती हैं। स्वयं को आत्मा समझकर परमात्मा के साथ मधुर सम्बंध स्थापित कर उनसे सर्व-शक्तियां, सकारात्मक तरंगें या वायब्रेशन लेकर फसलों और पेड़-पौधों, प्रकृति, पाँच तत्वों को देते हैं। जिससे फसलों की उपज और गुणवत्ता दोनों बढ़ती है।
- सुबह-शाम परमात्मा की याद में फसलों को मधुर संगीत सुनाकर मेडिटेशन किया जाता है।
- खेती में काम करने वाले सभी किसान भाई-बहनें अपने काम की शुरुआत परमात्म-याद के गीत पर योग करके करते हैं।
- किसानों को शाश्वत जैविक-यौगिक खेती की ट्रेनिंग दी जाती है। राजयोग मेडिटेशन से किसानों का मनोबल बढ़ता है। तनाव, चिंता से उन्हें मुक्ति मिलती है। खेती में आने वाली समस्याएं, प्राकृतिक प्रकोप या अन्य संकटों से सामना करने के लिए उन्हें शक्ति मिलती है और एक नई स्फूर्ति उनमें पैदा होती है।
- खेती में लगने वाले जैविक खाद, दवाएं बाहर से न खरीद खेती में ही तैयार किये जाते हैं। जैसे कि गौ-मूत्र, जीवामृत, नीम अर्क, दशपर्णी अर्क, गोकृपामृत, केंचुए की खाद, कम्पोस्ट खाद, गोबर की खाद आदि और इन्हें बनाने का प्रशिक्षण भी दिया जाता है।
- खेती में से निकलने वाला कचरा या फसल का शेष-अवशेष, घास, इन्हें जलाया नहीं जाता है। इनका भूमि पर आच्छादन कर ज़मीन में गाड़ दिया जाता है। जिससे ज़मीन की उर्वरक-शक्ति(सेंद्रिय कर्ब) बढ़ती है।

- बीज संस्कार विधि

निरोगी व शक्तिशाली पौधे की उपज के लिए बीजों को परमात्मा के सामने रखकर उन्हें परमात्मा से शक्तिशाली किरणें, शुद्ध वायब्रेशन्स लेकर देते हैं। बीजामृत, ट्राइकोडर्मा, पी.एस.बी., ऐजोटोबैक्टर इत्यादि जीवाणु कल्चर की बीज प्रक्रिया की जाती है।
- फसल-संरक्षण के लिए फसलों पर हर दस-पंद्रह दिन में अमावस्या के आस-पास जीवामृत, दशपर्णी अर्क, नीम अर्क, अग्नि अस्त्र, ब्रह्मास्त्र

इत्यादि का स्प्रे किया जाता है। ज़मीन को शक्तिशाली बनाने के लिए गोबर की खाद, केंचुए की खाद, जैव रस, अमृत पानी, सभी प्रकार की खलियों की पेंड, कम्पोस्ट खाद दी जाती है।
- खेती में देशी गाय की भूमिका अहम है। उसके गौ-मूत्र, गोबर से खाद, दवाइयां बनाई जाती हैं। इसके साथ ही धूप, अगरबत्ती, साबुन, गौ-अर्क इत्यादि चीज़ें भी बनाई जाती हैं। गाय के गोबर से बायोगैस बनाया जाता है, जिससे घर का पूरा खाना बन जाता है। जिससे हर माह हज़ार रुपये की बचत हो जाती है। गाय के दूध से बने अलग-अलग तरह के पदार्थ बनाकर भी बेचे जाते हैं।
- जिला परिषद् कृषि विभाग की ओर से कृषिनिष्ठ पुरस्कार से ब्र.कु. बाळू भाई को सम्मानित किया गया है।
- महाराष्ट्र शासन कृषि विभाग द्वारा दिये जाने वाले 'सेन्द्रिय कृषि भूषण पुरस्कार' के लिए नॉमिनेट(नामांकित) किया गया है।

ग्रुप व कम्पनी की स्थापना

- शाश्वत जैविक-यौगिक खेती का लाभ गांव के किसानों को हो, उनके माल को बाज़ार पेठ मिले, उन्हें तनाव से मुक्ति, सच्चे मन की शांति मिले, इस उद्देश्य से 01 जनवरी 2019 को महाराष्ट्र शासन,कृषि विभाग आत्मा और पारंपरिक कृषि विकास योजना के अंतर्गत 'मालेगांव ओम शांति ऑर्गेनिक फार्मर' के नाम से किसानों के ग्रुप की स्थापना की गई। इनमें 34 किसान हैं और पचास एकड़ ज़मीन पर अनाज, सब्जी, हल्दी, गन्ना आदि का उत्पादन करते हैं।
- ग्रुप के माध्यम से हर महीने में हर किसान के खेत पर कृषिशाला होती है। जिसकी शुरुआत परमात्म-याद का गीत बजाकर मेडिटेशन द्वारा होती है। वहाँ पर किसानों की समस्या सुनकर कृषि अधिकारियों एवं विशेषज्ञों द्वारा उनका समाधान किया जाता है। नई तकनीक, नये तंत्र ज्ञान की लेन देन होती है।
- ब्र.कु. भगवान इंगोले के बड़े भाई किसान नेता प्रहलाद इंगोले, इनके सहयोग से इस कार्य को और बड़े पैमाने पर ले जाने के लिए 'शेतकरी मित्र फार्मर प्रोड्यूसर कं.लि.' की स्थापना की गई। जिसमें दस डायरेक्टर हैं और पाँच सौ किसान सदस्य हैं।
- किसानों को लाभ देने के लिए कृषि उपकरण बैंक की स्थापना हुई, जिसके द्वारा ट्रैक्टर सहित अन्य सभी औजार कम दाम में उपलब्ध कराये जाते हैं। किसानों का माल लेकर सीधे ग्राहकों को बेचा जाता है। जिससे किसानों को अच्छे दाम मिलते हैं। किसानों से कोई भी कमीशन नहीं लिया जाता।
- कंपनी के सदस्यों द्वारा एक सौ पचास टन सेन्द्रिय हल्दी का पिछले वर्ष बांग्लादेश में निर्यात किया गया जिससे किसानों को फायदा हुआ।
- ब्रह्माकुमारीज़ कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग के मार्गदर्शन एवं सहयोग से वृक्षारोपण, व्यसनमुक्ति, मिट्टी-परीक्षण, जल-संवर्धन, यौगिक खेती प्रशिक्षण, कृषि प्रदर्शन, अनाज महोत्सव आदि विषयों पर कार्यक्रमों के द्वारा जनजागृति की जाती है।
- किसान ग्रुप के माध्यम से नांदेड़ शहर में 'विटोबा नैसर्गिक भाजीपाला' के नाम से दो स्थानों पर स्टॉल पर अनाज, दाल, सब्जियों आदि की बिक्री होती है। साथ ही इसकी ऑनलाइन डिलीवरी भी की जाती है। जिससे सुशिक्षित बेरोजगार युवाओं को रोजगार उपलब्ध हुआ। किसानों को जैविक माल के दोगुना दाम मिले। इसमें सभी किसान को एक साथ आने की ज़रूरत नहीं, दो-दो किसान बारी-बारी आकर सबका इकट्ठा माल बेच सकते हैं, जिससे सभी का टाइम बचता है। ग्रुप की हर रोज़ दस से पंद्रह हज़ार तक की बिक्री होती है।
- ग्रुप के उपाध्यक्ष संदीप डाकुलगे, सचिव बाला जी सावंत, ब्र.कु. भीमराव इंगोले आदि सदस्यों का सहयोग मिलता है।

ओम एग्रोवन निवास

ब्र.कु. भगवान इंगोले ने ब्रह्माकुमारीज़ के कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग से प्रेरणा लेकर अपने खेत पर यौगिक खेती का मॉडल बनाया है। जहाँ पर मेडिटेशन रूम, प्रशिक्षणार्थियों के रहने-खाने, यौगिक खेती प्रशिक्षण हॉल, बायो गैस आदि सभी प्रकार की व्यवस्था की गई है। खेती पर दिन भर संगीत बजता है, जगह-जगह पर अच्छे सुविचार, स्लोगन्स आदि लिखे हुए हैं। हर खेत में परमात्म-ध्वज लहराता है। ऊर्जा-क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनने के लिए उन्होंने सौर कृषि पंप लगाया है जिससे ऊर्जा की बचत होती है। यहाँ आने वाले लोग बहुत प्रसन्न होते हैं और प्रेरणा लेकर जाते हैं।

एक कीट(इली) दिखाओ और इनाम पाओ

पिछले साल एक एकड़ में ब्र.कु. बाळू ने जैविक रीति से कपास की खेती की। फसल के संरक्षण के लिए बीच-बीच में और आजू-बाजू में गेंदा, मक्का, चौलाई, एरंडी जैसे फसल लगाते हैं जिससे मुख्य फसल का संरक्षण होता है। हर पंद्रह दिन में दशपर्णी अर्क, जीवामृत, गोकृपामृत, नीम अर्क आदि का स्प्रे किया। जिसके बाद आपने ये चुनौति दी कि फसल पे एक भी कीट दिखाओ और इनाम लेकर जाओ। कृषि अधिकारी, कुछ मीडिया पत्रकार और परिसर के किसान, उन्होंने बारीकी से जाँच की पर उन्हें एक भी कीट नहीं मिला। जिसके बाद कृषि अधिकारियों द्वारा आपको 'कृषि पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। इससे यौगिक खेती के लिए आपका मनोबल और बढ़ गया।